राजद समाचार

आजादी, समानता और भाईचारा

अंक-30 मासिक जनवरी, 2024 सहयोग राशि–40 रुपये

जननायक जन्मशताब्दी अंक

इस बार

कर्पूरी ठाकुर का संक्षिप्त जीवन परिचय- रामनरेश यादव	03
साहस, समझ और दृढ़ता की बेजोड़ शख्सियत- उर्मिलेश	04
समाजवादी आंदोलन की एक विरल आवाज- मंगनी लाल मंडल	06
समाजवादी विचारधारा के वह लेनिन थे- देवेंद्र प्रसाद यादव	10
कोई तुमसा न हुआ- शंकर प्रलामी	12
केंद्रीय कारा में जननायक- विकास पांडेय	14
कर्पूरी ठाकुर की सादगी के किस्से- निलेश कुमार	15
कर्पूरी ठाकुर : लोकदल के नेता के रूप में- डॉ.विष्णुदेव रजक	16
कर्पूरी ठाकुर : संघर्ष चेतना की आग- अविनाश कुमार	26
साक्षात्कार	
सूर्यनारायण चौधरी की कर्पूरी ठाकुर से बातचीत	27
भाषण	
कानून के रहते हुए भी जमीन के मामले में बेईमानी हुई है	29
आदमी अगर नहीं तो फिर देश नहीं	31
पार्टी गतिविधियां	
सावित्रीबाई और फातिमा की याद में- डॉ. दिनेश पाल	37
कवि का पन्ना	
डॉ.सागर लिखित जिन्दाबाद गीत	40

सम्पादक

अरुण आनंद

सहयोग

कवि जी/ डॉ. दिनेश पाल

जगदानन्द सिंह

प्रदेश अध्यक्ष, राष्ट्रीय जनता दल, वीरचन्द पटेल पथ, पटना-01 द्वारा प्रकाशित एवं वितरित

राजद समाचार की ईमेल आईडी

samacharrjd@gmail.com

हिन्दू बनाम हिन्दू- उदारता बनाम कट्टरता

'गांधी वास्तव में खुद कभी हिन्दू मंदिर में नहीं गए- कुछेक बिरले मौकों पर ही उन्होंने ऐसा किया। 1946 में वह मदुरै के मीनाक्षी मंदिर में तब गए जब काफी जद्दोजहद के बाद मंदिर प्रशासन ने दलितों को मंदिर में प्रवेश की अनुमति दी। यद्यपि गांधी खुद को हिन्दू बताते थे, लेकिन उनकी प्रिय अराधना पद्धति सर्वधर्म समभाव प्रार्थनाएं होती थी, जिनमें हिन्दू, मुस्लिम, पारसी, सिख, जैन और ईसाई सभी खुले में बैठकर अपने धर्मग्रंथों का सामूहिक पाठ करते थे। यह प्रयोग इस उसूल पर उनके गहरे विश्वास की पुष्टि करता है कि भारत सभी तरह के विश्वासों और आस्थाओं का देश है।'

(रामचंद्र गुहा, 8 जनवरी 2024, दि टेलीग्राफ)

अफ्रीकी-अमेरिकी नागरिक अधिकारों के संघर्ष के प्रमुख नेता, डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जिन्हें अमेरिका का गांधी कहा जाता है, ने कहा था कि 'जहां सियासत धार्मिक मामलों को शांत करे वह देश महान होता है। जहां सियासत खुद धार्मिक मसलों को पैदा करे...समझो देश को गलत लोग चला रहे हैं।' आज हमारा भारत इसी रास्ते की ओर अग्रसर है। सहसा विश्वास नहीं होता कि लोकतंत्र के महज 7 दशक बाद ही देश को इतने बुरे दौर से गुजरना पड़ेगा। गांधी बहुत कम मंदिरों में गए, लेकिन उन्होंने देश की सारी आस्थाओं को मान दिया आश्चर्य है कि आज उसी गांधी के देश में यह सब हो रहा है।

अयोध्या में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भारत सरकार के नेतृत्व में जिस तामझाम के साथ राममंदिर का उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ, वह भले ही भाजपा मार्का 'सनातन' के लिए गर्व की बात हो, लेकिन यह भारतीयता और हमारी साझी संस्कृति के लिए उतना ही घातक है। धर्म महत्वपूर्ण है, लेकिन इतना भी नहीं कि वह राजनीति का ही स्थानापन्न हो जाए और दूसरे धर्मों के लिए शत्रुता का पर्याय बनकर किसी दल के लिए सुरक्षित वोट बैंक का पुख्ता औजार बन जाए। नरेन्द्र मोदी ने रामलला और अयोध्या मिशन के द्वारा यही काम किया है। उनका यह कृत्य संविधान और इसके धर्मनिरपेक्ष ढांचे पर यह ऐसा हमला है, जिसकी भरपाई निकट भविष्य में हो भी पाएगी, इसमें हमें संदेह है। आखिर भाजपा के इस उन्मादी हिन्दुत्व की काट क्या है, विचारणीय सवाल यह है। यह सही है कि हिन्दू जाति समूह में इसे लेकर एक अलग तरह की उत्तेजना है और कमोबेश पूरा देश इसकी जद में है। लेकिन देश के अलग-अलग राज्यों में क्षेत्रीय पार्टियां इसकी काट भी खोज रही हैं। कुछ राज्य धर्म की काट धर्म में ढूंढ रहे हैं। दिल्ली में अरविंद केजरीवाल, बंगाल में ममता बनर्जी और उड़ीसा में नवीन पटनायक यही काम कर रहे हैं। दिल्ली में रामायण के सुंदराकांड का पाठ हो रहा है और हर सप्ताह इसे करने का निर्णय लिया गया है। बंगाल में काली मंदिर का भ्रमण हो